ॐ

~~~~~~~~~~

विद्या भवन,बालिका विद्यापीठ,लखीसराय ।

कक्षा-अष्टम विषय- हिन्दी

दिनांक—12/07//2020 सोना

महादेवी वर्मा

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

卐 सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया 卐

मेरे प्यारे बच्चों, शुभ प्रभात!

आपका दिन मंगलमय हो!

आज पुन: कहानी को आगे की ओर ले चलते हैं।

एन सी इ आर टी पर आधारित

सोना

___महादेवी वर्मा

प्रशांत वनस्थली में जब अलस भाव से रोमंथन करता हुआ मृग- समूह शिकारियों के आहट से चौंककर भागा, तब सोना की माँ सद्य: प्रसूता होने के कारण भागने में असमर्थ रही। सद्य: जात मृग शिशु तो भाग नहीं सकता था। अतः मृगी माँ ने अपनी संतान को अपने शरीर की ओट में सुरक्षित रखने के प्रयास में प्राण दे दिए।

पता नहीं दया के कारण या कौतुकप्रियता के कारण शिकारी मृत हिरनी के साथ उसके रक्त से सने और ठंडे स्तनों से चिपके हुए शावक को जीवित उठा लाए। उनमें से किसी के परिवार की सदय गृहणी और बच्चों ने उसे पानी मिला दूध पिला -पिलाकर दो- चार दिन तक जीवित रखा ।

सुष्मिता के समान ही किसी बालिका को मेरा स्मरण हो आया और वह उस अनाथ शावक को मुमूर्ष अवस्था में मेरे पास ले आयी ।शावक अवांछित तो था ही ,उसके बचने की आशा भी धूमिल थी। परंतु उसे मैंने स्वीकार कर लिया।स्निग्ध सुनहले रंग के कारण सब उसे सोना कहने लगे। दूध पिलाने की शीशी,ग्लूकोज,

बकरी का दूध आदि सब कुछ एकत्र करके, उसे पालने का कठिन अनुष्ठान आरंभ हुआ।

उसका मुंह इतना छोटा था कि उसमें शीशी का निपल समाता ही नहीं था, उस पर उसे पीना भी नहीं आता था। फिर धीरे-धीरे उसे पीना ही नहीं दूध की बोतल पहचानना भी आ गया। आँगन में कूदते-फांदते हुए भी भक्तिन को बोतल साफ करते देखकर वह दौड़ आती और अपनी तरल चकित आँखों से उसे ऐसे देखने लगती मानों वह कोई सजीव मित्र हो।

उसने रात में मेरे पलंग के पाए से सटकर बैठना सीख लिया था परंतु वहाँ गंदा न करने की आदत कुछ दिनों के अभ्यास से पड़ सकी।

अँधेरा होते ही वह मेरे पलंग के पास आ बैठती और फिर सवेरा होने पर वह बाहर निकलती।

उसका दिन भर का कार्यकलाप भी एक प्रकार से निश्चित था। विद्यालय और छात्रावास की विद्यार्थियों के बीच पहले वह कौतुक का कारण रही ।परंतु कुछ दिन बीत जाने पर वह उनकी ऐसी प्रिय साथिन बन गई, जिसके बिना उनका किसी काम में मन ही नहीं लगता था ।

क्रमशः

<u>कठिन शब्दार्थ</u> -:

सदय:प्रसूता = तुरंत जन्म देने वाली, उसी समय जन्म देने वाली

रोमंथन = जुगाली ,पागुर

शैशवावस्था = बचपन

अवांछित = ना चाहा हुआ या जिसकी चाह नहीं हो

कौतुक = उत्सुकता

धूमिल = धुंधला

मुमूर्ष = मृतप्राय मुच्छित

छात्र कार्य-

- कहानी का सस्वर वाचन करें ।
- कठिन शब्दों के अर्थ लिखें एवं याद करें।

सोना

अपनी रोग प्रतिरोधक क्षमता को बनाए रखें,

स्वस्थ रहें, सुरक्षित रहें ।☺

धन्यवाद

कुमारी पिंकी “कुसुम”